ISSN 2454-2725

95
मार्च 2023

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

# जनकृति

IPI Value (2.65)

Peer Reviewed Journal

Pc: Bernd

संपादक: डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

# जनकृति

**अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका**

**वर्ष 8, अंक 95** **मार्च 2023**

**परामर्श मंडल**

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. रमा, डॉ. हरीश नवल, डॉ. हरीश अरोड़ा, डॉ. प्रेम जन्मेजय, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. कपिल कुमार, प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन

**संपादक**

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा
(सहायक प्रोफ़ेसर, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

**सहायक संपादक**

डॉ. पुनीत बिसारिया
(एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

**संपादन मण्डल/विशेषज्ञ समिति**

डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ , महाराष्ट्र)
डॉ. दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा)
डॉ. नाम देव (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. प्रज्ञा (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रचना सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रूपा सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बाबु शोभा राम गोवेरमेंट आर्ट कॉलेज, राजस्थान)
डॉ. पल्लवी (सहायक प्रोफ़ेसर, तेजपूर विश्वविद्यालय, असम)
डॉ. मोहसिन खान (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जेएसएम कॉलेज, रायगढ़, महाराष्ट्र)
डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (सहायक प्रोफ़ेसर, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम)
डॉ. प्रवीण कुमार (सहायक प्रोफ़ेसर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)
डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी (सहायक प्रोफ़ेसर, जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ, राजस्थान)
डॉ. अंबिकेश त्रिपाठी (सहायक प्रोफ़ेसर, गांधी एवं शांति विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
डॉ. ज्ञान प्रकाश (सहायक प्रोफ़ेसर, बिहार)

**संपादन सहयोग**

श्री चन्दन कुमार (शोधार्थी, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा)
राकेश कुमार (शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

**संस्थापक सदस्य**

कविता सिंह चौहान (मुंबई)
डॉ. जैनेन्द्र कुमार (बिहार)

**अंतरराष्ट्रीय सदस्य**

प्रो. अरुण प्रकाश मिश्रा (स्लोवेनिया), डॉ. इंदु चंद्रा (फ़िजी), डॉ. सोनिया तनेजा (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. अनिता कपूर (अमेरिका), राकेश माथुर (लंदन), रिद्या (श्री लंका), मीना चोपड़ा (कैनेडा), पूजा अनिल (स्पेन)

जनकृति अव्यवसायिक
मार्च 2023 अंक 95, वर्ष 8

**सहयोग राशि** : 60 रुपये ( वर्तमान अंक )
150 रुपये ( संस्थागत)

**व्यक्तिगत सदस्यता** : 800 रुपये (वार्षिक)
3000 रुपये (पंचवर्षीय)
5000 रुपये (आजीवन)

**संस्थागत सदस्यता** : 1200 रुपये (वार्षिक)
6000 रुपये (पंचवर्षीय)
10000 रुपये (आजीवन)

**(डिजिटल प्रति सदस्यता)**

**बैंक खाता विवरण** : Account holder's name- Kumar Gaurav Mishra
Bank name - Punjab National Bank
Account type – saving account
Account no. 7277000400001574
IFSC code- PUNB0727700

**पत्र व्यवहार** : फ्लैट- जी 2, बागेश्वरी अपार्टमेंट
आर्यापुरी, रातू रोड़, रांची, झारखंड
पिन कोड: 834001, संपर्क- +918805408656

**नोट** : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक है।

**ध्यानार्थ** : अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप जनकृति में शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्यिक रचनाएँ, वैचारिक लेख, साक्षात्कार एवं पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती है। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

JANKRITI
Interdisciplinary Peer-Reviewed Bilingual International Monthly Magazine
Editor: Dr. Kumar Gaurav Mishra
Language: Bilingual (Hindi & English)
Publisher: JANKRITI
ISSN: 2454-2725
Website: www.jankriti.com
Email: jankritipatrika@gmail.com

# संपादकीय

आप सभी पाठकों के समक्ष जनकृति का मार्च 2023 अंक प्रस्तुत है। इस अंक में आप साहित्य, कला, राजनीति, लोक संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित शोध आलेख, लेख पढ़ सकते हैं।

जनकृति एक बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। यह पूर्ण रूप से विमर्श केन्द्रित पत्रिका है, जहां आप विभिन्न अनुशासन के नवीन विषयों को एकसाथ पढ़ सकते हैं। पत्रिका में एक ओर जहां साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती है वहीं नवीन विषयों पर लेख, शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

- **डॉ. कुमार गौरव मिश्रा**

# जनकृति

**अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका**

**वर्ष 8, अंक 95** **मार्च 2023**


## अनुक्रम


**संपादकीय4**

**कला-विमर्श**

हिंदी नवजागरण का अंतर विन्यास और भारतीय रंगमंच / अभिषेक उपाध्याय 8

भारतीय नृत्य परंपरा और उसका औचित्य / अभिषेक कुमार यादव 15

**दलित एवं आदिवासी -विमर्श**

भारतीय विधायिका और संसदीय लोकतंत्र में आदिवासी हस्तक्षेप- झारखंड आंदोलन का इतिहास / राकेश कुमार, डॉ. सुचेता सेन चौधुरी 22

सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा : वस्तु स्थिति एक बहस / मनीष कुमार 36

**स्त्री-विमर्श**

नवरत्न महिला वैज्ञानिकों के साथ भारत की अंतरिक्ष यात्रा / रोहित कुमार 45

**किन्नर-विमर्श**

किन्नर विमर्श : क्या सचमुच यह समुदाय हमारी तल्खी और बेरुखी का हकदार है?!/ वैशाली कुंडल 53

**शिक्षा-विमर्श**

Ensuring Effective Learning: Studying Activity Based Teaching Learning / Deepmala Pandey 59

शिक्षा दर्शन से जीवन मूल्यों का विकास-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन /निधि शर्मा 69

**राजनीतिक-विमर्श**

डिजिटल मीडिया युग में राजनीतिक संप्रेषण के बदलते स्वरूप का अध्ययन / सौरभ जैन 73

भारत की राजनीतिक प्रक्रिया के विचारधारात्मक संदर्भों में उदारवाद - एक विश्लेषण / डॉ. मनोज अवस्थी 82

लैंगिक समानता का स्वरूप एवम् हिमाचल का यथार्थ: विशेष संदर्भ: राजनीतिक प्रतिनिधित्व / प्रीति 92

**सामाजिक विज्ञान**

सेवाग्राम आश्रम : राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु महात्मा गांधी की रचनात्मक प्रयोगशाला/ प्रिंस कुमार सिंह 105

सतत् ग्रामीण विकास की रीढ़ : आलोक कुमार / डॉ मन्तोष कुमार पाण्डेय 120

**साहित्यिक-विमर्श**

विमर्शवादी राजनैतिक दौर में साहित्य की चुनौतियां / डॉ. प्रेरणा गौड़ 129
महाराष्ट्र के वैचारिक परंपरा में राजर्षि शाहू महाराज का योगदान/ वाढेकर रामेश्वर महादेव, संजय राठोड 136
भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा में रस सिद्धांत / प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन 144
'तीसरा क्षण'- काव्य दृष्टि और रचना -प्रक्रिया / सूर्य प्रकाश त्रिपाठी 152
'चाक' उपन्यास में स्त्री-सशक्तिकरण/ सुशीला बाई, डॉ. कविता भाटिया मेहता 159
कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी – विमर्श/ डॉ. मोहम्मद इसराइल 166
नरेश मेहता की काव्य साधना : सुरेशचंद्र एक दृष्टि / अस्मिता पटेल 173
'कटा हुआ आसमान' उपन्यास में महानगरीय जीवन परिवेश / नीतीश कुमार 188
निराला के काव्य में युग बोध / आदर्श उपाध्याय 196
मानवेतर संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता उपन्यास : अल्फा बीटा गामा / चंदा सागर 206
औरत बिकाऊ और मर्द कमाऊ : उदय प्रकाश की कहानियाँ / विवेक कुमार पाण्डेय 214
'कही अनकही' में अभिव्यक्त विकलांग जीवन-संघर्ष एवं समकालीन समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन/ आशीष कुमार 225
महादेवी वर्मा के कथा साहित्य में स्त्री लेखन / डॉ. कमला चौधरी 235
रानी लक्ष्मी कुमारी चुंडावत के साहित्य में स्त्री विमर्श : राजस्थान की प्रेम कथाओं के विशेष सन्दर्भ में/ धर्मदास अटवाल 242
सामाजिक यथार्थ का आइना : अमृत और विष / बिरजानन्द मिश्र 247
स्वनिर्णय की ओर बढ़ते कदम और महिला कथाकार / डॉ. बीना जैन 255
अपनी-अपनी बीमारी : वर्तमान समय की विविध बीमारियों की शिनाख्त कराते हरिशंकर परसाई/ पूजा प्रसाद 267

**लोक साहित्य एवं संस्कृति**

जनजातीय क्षेत्र 'पांगी' की लोकसंस्कृति एवं परम्पराएँ / भरत सिंह, ज्ञान चंद 276

**अर्थशास्त्र**

Are mergers of Public sector bank contributor of growth or bottleneck in the system?/ Himanshi Swami 285

 ISSN 2454-2725

# हिंदी नवजागरण का अंतर विन्यास और भारतीय रंगमंच

**अभिषेक उपाध्याय**
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सम्पर्क सूत्र 9453888250

**सारांश**

*भारतीय नवजागरण विविध दृष्टिकोण से समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न करता है। जब भी देश स्थिति में विशिष्ट प्रकार की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकृतियां दृष्टिगोचर हुई है नवजागरण के द्वारा ही उन्हें निवारित करने का प्रयत्न किया गया है। इसी कारण भारतीय नवजागरण को हम एक प्रकार की नवीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारशीलता का उत्स कह सकते हैं। हमारे यहां नवजागरण की परिपाटी का प्रथम उत्थान वैदिक साहित्य परंपरा के साथ ही होता है और इसी के साथ भारतीय रंगमंच की प्राचीन परंपरा भी विकसित होती है। इसी कारण हम यह कह सकते हैं कि हमारे यहां भारतीय नवजागरण और रंगमंच का विकास समानांतर होता आया है।*

**बीज शब्द:** *नवजागरण, चेतना, सामाजिक, उत्थान, नाटक, रंगमंच*

## शोध आलेख

भारतीय नवजागरण विविध दृष्टिकोण से समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न करता है। जब भी देश स्थिति में विशिष्ट प्रकार की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकृतियां दृष्टिगोचर हुई है नवजागरण के द्वारा ही उन्हें निवारित करने का प्रयत्न किया गया है। इसी कारण भारतीय नवजागरण को हम एक प्रकार की नवीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारशीलता का उत्स कह सकते हैं। यदि भारतीय समाज अपनी अतीतोन्मुखी दृष्टि से पूर्व काल की विशिष्ट चिंतनपरक अवधारणाओं पर विचार करें तो उसे हमारी चिंतनशीलता के विविध आयामों में नवजागरण की अंत: सूत्रात्मकता के दर्शन हो सकते हैं। हमारे समाज की प्रारंभिक चिंतनशीलता में ही जागतिक बोध के प्रति अत्यधिक आग्रह देखने को मिलता है। "नवजागरण काल के बुद्धिदीप्त लोग आत्मग्रस्त नहीं थे। वे प्रचलित धारणाओं को चुनौती दे रहे थे। उनके मन में प्रश्न थे, जिज्ञासा थी और समाज सुधार की हार्दिक बेचैनी थी। वे एक अनोखी मानवता से भरे थे। धर्म, शिक्षा, जातीय भाषा, स्त्री प्रश्न और जाति व्यवस्था पर खुलकर तर्क-वितर्क होते थे।"[1]